उज्जयिनी मध्याह्न रेखा

चर्चा में क्यों?

सामाजिक विज्ञान की कक्षा 6 की नई NCERT की पाठ्यपुस्तक के अनुसार, **भारत की अपनी एक प्रधान मध्याह्न रेखा थी** जो [ग्रीनविच मध्याह्न रेखा]() **से काफी आगे थी** और इसे **"मध्य रेखा" कहा जाता था,** जो मध्य प्रदेश के [उज्जैन]() शहर से होकर **गुज़रती थी।**

मुख्य बिंदु:

- मध्य रेखा उज्जयिनी (आज का उज्जैन) शहर से होकर गुज़रती थी, जो कई शताब्दियों तक [खगोल विज्ञान]() का एक **प्रतिष्ठित केंद्र** था।
  - लगभग 1,500 वर्ष पहले **प्रसिद्ध खगोलशास्त्री** [वराहमिहिर]() यहीं रहते थे और काम करते थे।
- **भारतीय खगोलशास्त्री अक्षांश और देशांतर की अवधारणाओं से परिचित थे, जिनमें शून्य या प्रधान मध्याह्न रेखा की** आवश्यकता भी शामिल थी।
- **उज्जयिनी मध्याह्न रेखा** सभी **भारतीय खगोलीय ग्रंथों में गणना के लिये एक संदर्भ** बन गई।

वराहमिहिर (505–587 ई.)

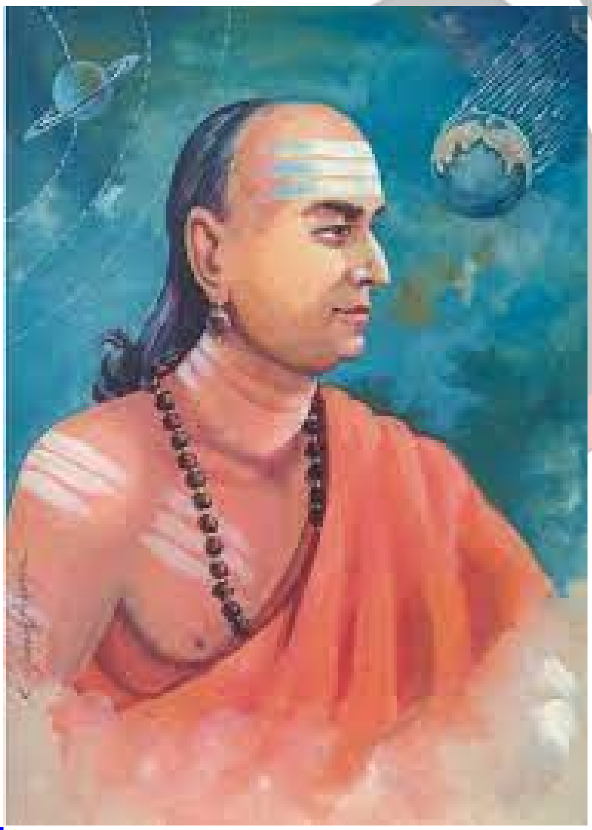
[//]()

- वह एक प्रसिद्ध **खगोलशास्त्री, गणितज्ञ और ज्योतिषी थे**
- **उल्लेखनीय कार्य:**
  - **बृहत् संहिता** (खगोल विज्ञान, ज्योतिष, वास्तुकला, रत्न विज्ञान, कृषि, गणित और रत्न विज्ञान पर व्यापक कार्य)।

        - उन्होंने **ज्योतिष के प्रमुख पहलुओं जैसे कि कुंडली** आदि के बारे में लिखा।
        - वे **पंचसिद्धांतिका** (गणितीय खगोल विज्ञान पर पुस्तक) में यह बताने वाले पहले व्यक्ति थे कि **अयनांश** (विषुवों का पूर्वगमन) 50.32 सेकंड तक रहता है।
    - उन्होंने सबसे पहले **गुरुत्वाकर्षण** को एक आकर्षक “बल” के रूप में वर्णित किया, जो विभिन्न वस्तुओं को एक साथ बाँधता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ujjayini-meridian-1